राहुल गांधी (मेवाल)। अल्पाधिकारियों अस्पताल के सामान्य वार्ड में पड़ा सोहराब एक टकराव दोरों का ऑर्डर को और देखता रहता है। मेवाल के इस ट्रक ड्राइवर को उस दिन का इंतजार है जब वह अपने पैरों के बल खड़ा हो सकेगा। लेकिन उसका इंतजार बदलता जा रहा है।

जानकारी के अनुसार, सड़क दुर्घटना में सोहराब (30) की दाहिनी टांग में फ्रेक्चर हुआ था। निजी अस्पताल में सब लाख रौप्य खर्च करने के बाद सरकारी अस्पताल में भर्ती हुआ। लेकिन यहां भी तकलीफ दूर नहीं हुई। अब डॉक्टर का कहना है कि उसे रोहतक जाना पड़ा, वह अपरेशन होगा। तब से वह बिल्कुल टूट गया है। आखिर सोहराब का आपरेशन हो गया भी होता तो कैसे?

ओमान के सुलतान की मदद से बने इस अस्पताल में बेहोशी का डॉक्टर नहीं है। पूरे जिले के निजी या सरकारी किसी भी अस्पताल में बेहोशी डॉक्टर नहीं है और पड़ोसी जिलों के डॉक्टर मेवाल आने को तैयार नहीं है।

### बदलाव

मेवाल के निजी और सरकारी अस्पतालों में बेहोशी का डॉक्टर नहीं

सरकारी कोशिशें डॉक्टरों को मेवाल में टिकाए रखने में नाकाम रहीं

सोहराब की तरह तमाम मरीज आपरेशन के लिए राजस्थान, दिल्ली या गुजरात के अस्पतालों की ठीकर खाते हैं। अल्पसंख्यक महबुब जिले में न तो सर्जरी की सुविधा है न ही कोई स्पेशलिस्ट। यहां कोई गाइनकारोंजिस्ट भी नहीं है। सरकारी कोशिशें डॉक्टरों को यहां टिकाए रखने में नाकाम रही है। यहां डॉक्टरों को हर महीने 25,000 रूपये अतिरिक्त मिलते हैं फिर भी कोई स्पेशलिस्ट नहीं टिकाता। डॉक्टरों को इतना पहलेह है कि वे नौकरी तक छोड़ देते हैं। अब भी 10 डॉक्टर द्वारा देने में गामब है। सिविल अस्पताल, मांडीखेडा के सीएमों के एस राव ने अपर उजाला से कहा, ‘डॉक्टरों के कुल 77 पद मंजूर हैं जिसमें से सिर्फ़ 57 की भर्ती हुई। इसमें से 10 बिना बाते छह माह से गामब है, सिर्फ़ 47 डॉक्टर द्वारा पर है। यहां कोई भी गाइनकारोंजिस्ट, पेयोलिजिस्ट, ब्लडबैक, रेडियोलिजिस्ट, इंटरटी स्पेशलिस्ट नहीं है। स्पेशलिस्टों में सिर्फ़ बच्चों, हड़ी, आंख, लचा के डॉक्टर है।' मार्टी तीन डॉक्टर महिलाएँ हैं जो गुजरात से आती हैं। उपायूक सी आर राणा का कहते हैं, ‘हम एक लाख तनख्वाह देने को तैयार हैं, बसरे स्पेशलिस्ट आयें तो सही। लोगों में मेवाल के चित्र भावित्त हैं जिसके कारण डॉक्टर आने को तैयार नहीं है। निजी अस्पताल न होने के कारण भी लोगों को दिखते हैं।’ राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य भिजने के तहत यहां कुल 800 आशा कर्मी की जजस्त के मुकाबले माजूस सिर्फ़ 315 है। मेवाल ने अब तक 10 मंत्री दिये हैं लेकिन विकास के रूप में उनकी छाप दूर तक नजर नहीं आती। स्थानीय विधायक अफ़ताब अहमद का कहना है कि सरकार मेवाल में स्पेशलिस्ट बुलाना को उन्हें विशेष प्रोफ़ेस्यन देने रही है।